श्रीलप्रभुपाद–दशकम्

(श्रील भक्तिरक्षक–श्रीधर गोस्वामी महाराज–विरचितम्)

सुजनार्बुदराधितपादयुगं युगधर्मधुरन्धर पात्रवरम्।
वरदाभयदायक–पूज्यपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादम्॥१॥

मैं कोटि–कोटि सज्जनोंके द्वारा आराधित, कृष्ण सङ्कीर्तन युग–धर्मके संस्थापक, विश्ववैष्णव राजसभाके पात्रराज अर्थात् अधिकारीवर्गमें श्रेष्ठतम, निखिल जीवोंके भय दूर करनेवालोंकी भी मनोकामना पूर्ण करनेवाले, सर्वपूज्य उन श्रील प्रभुपादके श्रीचरणकमलोंमें सदा–सर्वदा प्रणाम करता हूँ॥१॥

भजनोर्जितसज्जनसंघपतिं पतिताधिककारुणिकैकगतिम्।
गतिवञ्चितवञ्चकाचिन्त्यपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्॥२॥

जो भजन–सम्पन्न सज्जन–वृन्दोंके अधिपति हैं, जो पतितजनोंके प्रति अति करुणामय तथा उनकी एकमात्र गति हैं एवं जो वञ्चकोंके भी वञ्चक हैं, मैं उन श्रीलप्रभुपादके अचिन्त्य चरणकमलोंमें सदा–सर्वदा प्रणाम करता हूँ॥२॥

अतिकोमलकाञ्चनदीर्घतनुं तनुनिन्दितहेममृणालमदम्।
मदनार्बुदवन्दितचन्द्रपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्॥३॥

अतिकोमल काञ्चनवर्णवाले सुदीर्घ तनु जिसके द्वारा स्वर्णमय कमलनालोंकी मत्तता (सौन्दर्य) भी निन्दित होती है, जिन नख–चन्द्रोंकी वन्दना कोटि–कोटि कामदेव करते हैं, मैं उन श्रीलप्रभुपादके चरणकमलोंमें सदा–सर्वदा प्रणाम करता हूँ॥३॥।

निजसेवकतारकरञ्जिविधुं विधूताहितहुङ्कृतसिंहवरम्।
वरणागतबालिश–शन्दपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्॥४॥

जो नक्षत्र–मण्डलको रंजित करनेवाले चन्द्रकी तरह सेवक–मण्डली द्वारा परिवेष्टित होकर उनके चित्तको प्रफुल्लित रखते हैं, भक्तिविद्वेषिजन जिनके सिंहनादसे भयभीत रहते हैं एवं निरीह व्यक्ति जिनके चरणकमलोंका आश्रय ग्रहणकर परम कल्याण लाभ करते हैं, मैं उन श्रीलप्रभुपादके चरणकमलोंमें सदा–सर्वदा प्रणाम करता हूँ॥४॥

विपुलीकृतवैभवगौरभुवं भुवनेषु विकीर्तित गौरदयम्।
दयनीयगणार्पित–गौरपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्॥५॥

जिन्होंने श्रीगौरधामका (श्रीनवद्वीपधामका) विपुल ऐश्वर्य प्रकटित किया है, जिन्होंने श्रीगौराङ्गदेवकी महोदारताकी कथाओंका सम्पूर्ण विश्वमें प्रचार किया है एवं जिन्होंने अपने कृपापात्रोंके हृदयमें श्रीगौरपादपद्मकी स्थापना की है, मैं उन श्रीलप्रभुपादके चरणकमलोंमें सदा–सर्वदा प्रणाम करता हूँ॥५॥

चिरगौरजनाश्रयविश्वगुरुं गुरु–गौरकिशोरक–दास्यपरम्।
परमादृतभक्तिविनोदपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्॥६॥

जो चैतन्यमहाप्रभुके आश्रितजनोंके नित्य आश्रयस्थल और जगद्गुरु हैं, जो अपने गुरु श्रीगौरकिशोरके सेवापरायण हैं एवं जो श्रीभक्तिविनोद ठाकुरके सम्बन्धमात्रसे ही परम आदरयुक्त हैं, मैं उन श्रीलप्रभुपादके चरणकमलोंमें सदा-सर्वदा प्रणाम करता हूँ॥६॥

रघुरूपसनातनकीर्तिधरं धरणीतलकीर्त्तितजीवकविम्।
कविराज नरोत्तमसख्यपदमं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्॥७॥

जो श्रीरूप, सनातन और रघुनाथके कीर्तिरूपी झण्डेका उत्तोलनकर विराजमान हैं, अनेक लोग इस धरणीतलपर जिन्हें पाण्डित्य-प्रतिभामय जीव गोस्वामीसे अभिन्न तनु कहकर उनकी प्रशंसा किया करते हैं एवं जिनका श्रीलकृष्णदास कविराज तथा ठाकुर नरोत्तमसे सख्यभाव है, मैं उन श्रीलप्रभुपादके चरणकमलोंमें सदा-सर्वदा प्रणाम करता हूँ॥७॥।

कृपया हरिकीर्त्तनमूर्तिधरं धरणीभरहारक-गौरजनम्।
जनकाधिकवत्सल स्निग्धपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्॥८॥

जीवोंके प्रति असीम कृपाकर जो मूर्त्तिमान हरिकीर्तनरूपमें प्रकाशित हैं, जो धरणीके पापभारको दूर करनेवाले गौरपार्षद हैं एवं जो जीवोंके प्रति पितासे भी अधिक वात्सल्यके सुकोमल आकरस्वरूप हैं, मैं उन श्रीलप्रभुपादके चरणकमलोंमें सदा-सर्वदा प्रणाम करता हूँ॥८॥

शरणागतकिङ्करकल्पतरुं तरुधिक्कृतधीरवदान्यवरम्।
वरदेन्द्रगणार्चितदिव्यपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्॥९॥

शरणागत किङ्करोंके लिए (अभीष्ट प्रदान करनेमें) जो कल्पतरुके समान हैं, जिनकी सहिष्णुता और उदारता वृक्षोंको भी लज्जित करती हैं एवं वरदाताओंमें श्रेष्ठ व्यक्ति भी जिनके दिव्य श्रीचरणकमलोंकी पूजा किया करते हैं, मैं उन श्रीलप्रभुपादके चरणकमलोंमें सदा-सर्वदा प्रणाम करता हूँ॥९॥

परहंसवरं परमार्थपतिं पतितोद्धरणे कृतवेशयतिम्।
यतिराजगणैः परिसेव्यपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादम्॥१०॥

जो परमहंसकुलके चूड़ामणि हैं, जो परम पुरुषार्थ श्रीकृष्णप्रेम-सम्पत्तिके मालिक हैं, पतित जीवोंके उद्धारके लिए जिन्होंने संन्यासीका वेश धारण किया है एवं श्रेष्ठ त्रिदण्डि संन्यासियोंका समूह जिनके पादपद्मोंकी सेवा करता है, मैं उन श्रीलप्रभुपादके चरणकमलोंमें सदा-सर्वदा प्रणाम करता हूँ॥ १०॥

वृषभानुसुतादयितानुचरं चरणाश्रित रेणुधरस्तमहम्।
महदद्भुतपावनशक्तिपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादम्॥११॥

जो वृषभानुनन्दिनीके परमप्रिय अनुचर हैं, जिनकी चरण-रजको मैं अपने मस्तकपर धारण करनेके सौभाग्यके लिए अभिमान करता हूँ, उन अद्भुत पावनीशक्तिसम्पन्न श्रीलप्रभुपादके चरणकमलोंमें मैं सदा-सर्वदा प्रणाम करता हूँ॥११॥